GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

"प्रियदर्शिका " नाटिका का समीक्षात्मक अध्ययन

प्रवीण चौहान
शोध छात्र
संस्कृत विभाग
श्री गोविन्द गुरु युनिवर्सिटी,गोधरा

भूमिका:

संस्कृत साहित्य के नाट्यवाङ्मय में अनेक उच्चकोटि के नाटककारों ने अमूल्य योगदान दिया है। उनमे से भास, कालिदास, भवभूति, श्रीहर्ष आदि प्रमुख हैं। श्रीहर्ष विरचित "प्रियदर्शिका" एक प्रसिद्ध संस्कृत नाटिका है जो राजनैतिक, प्रेमपूर्ण एवं नारी-मन की गहराईयों को साहित्यिक सौंदर्य में प्रस्तुत करती है। इस नाटक का समिक्षात्मक अध्ययन नाटक के कथानक, पात्र, शैली, भाषा एवं रस-विधान के आधार पर किया गया है।

नाट्यकार परिचय – श्रीहर्ष:

श्रीहर्ष १२वीं शताब्दी के विद्वान संस्कृत नाटककार थे। वे कान्यकुब्ज (कन्नौज) के राजा विजयचन्द्र के राजकवि माने जाते हैं। इनकी प्रमुख नाटिकाएँ हैं –

1. प्रियदर्शिका
2. रत्नावली
3. नागानंद

कथानक सारांश:

"प्रियदर्शिका" नाटक एक राजकीय एवं प्रेमपूर्ण कथा पर आधारित है। इसमें राजा उदयन तथा महामात्य की कन्या प्रियदर्शिका के प्रेम तथा उनके मिलन की गाथा को दर्शाया गया है। यह नाटक पाँच अंकों में विभक्त है तथा प्रेम, नीति, राजनीति, शौर्य एवं स्त्री-संवेदना का सुन्दर समन्वय है। यह नाटक नाट्यशास्त्र के सभी अंगों का पालन करता है — नायक, नायिका, विदूषक, भाव, रस, वेश, दृश्य आदि सभी का संतुलन देखने को मिलता है।

राजा भ्रमरों से नयिका की रक्षा करते समय नायिका के सौंदर्य वर्णन हेतु -

अयि विसृज विषादं भीरु भृङ्गास्तवेते

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

परिमलरसलुब्धा वक्त्रपद्म पतन्ति ।
विकिरसि यदि भूयस्त्रासलोलायताक्षी
कुवलयवनलक्ष्मीं तत्कुतस्त्वां त्यजन्ति ॥

पात्र परिचय:

उदयन कौशाम्बी का राजा, मुख्य नायक हे | प्रियदर्शिका महामात्य की पुत्री, मुख्य नायिका हे | वासवदत्ता उदयन की पूर्व पत्नी हे | विहगानका प्रियदर्शिका की सखी यौगन्धरायण महामात्य हे |

नाटक की विशेषताएँ:

1. **प्रेम और राजनीति का समन्वय:** राजा उदयन की राजनीति में उलझी हुई प्रेमकथा को अत्यंत कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।
2. **नारी के मनोभावों का चित्रण:** प्रियदर्शिका की भावनाएँ, उसका प्रेम, त्याग एवं आत्मसम्मान नाटक को भावप्रवण बनाते हैं।

भृत्यानामविकारिता परिगता दृष्टा मतिर्मन्त्रिणां
मित्राण्यप्युपलक्षितानि विदितः पौरानुरागोऽधिकम् ।
निर्व्यूढा रणसाहसव्यमनिता स्त्रीरत्नमासादितं
निर्व्याजादिव धर्मतः किमिव न प्राप्तं मया बन्धनात्।।

इस श्लोक में स्त्रीरत्न की बात बताई गई है |

3. **संवादों की नाटकीयता:** संवाद सरल, प्रभावी एवं हृदयग्राही हैं। संस्कृत भाषा के सौंदर्य का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

काव्य दोष और गुण:

- **गुण:**
  1. रस-निष्पत्ति में कुशलता
  2. वर्णनात्मक शक्ति
  3. भावप्रवणता
- **दोष (अल्प मात्रा में):** कहीं-कहीं कथानक की गति मन्द है | उपपत्तियों की प्रचुरता से सहजता में कमी आती है |

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

- **नाटक में रस-विधान:** मुख्यतः श्रृंगार रस की प्रधानता है। अन्य रस – करुण, हास्य, वीर आदि का आंशिक प्रयोग है। श्रृंगार रस का उदाहरण -

पतालाद् भुवनावलोकनपरा किं नागकन्योत्थित्त
मिथ्या तत्खलु दृष्टमेव हि मया तस्मिन् कुतोडस्तीदृशी!
मूर्ता स्यादिह कौमुदी न धहते तस्या दिवा दर्शनं
केयं हस्ततलस्थितेन कमलेनालोक्यते श्रीखि!!

निष्कर्ष:

"प्रियदर्शिका" संस्कृत नाट्य परम्परा की एक उत्कृष्ट रचना है, जिसमें प्रेम, राजनीति, नारी संवेदना एवं काव्य सौंदर्य का अद्भुत संगम है। यह नाटक आज के पाठकों को भी उतना ही आकर्षित करता है जितना उस काल में करता रहा होगा। श्रीहर्ष की लेखनी संस्कृत नाटक को एक नवीन ऊँचाई प्रदान करती है।

सन्दर्भग्रन्थः

1. प्रियदर्शिका - श्री हर्ष,
संपादक - डॉ.गोविन्दलाल एस.शाह,
प्रकाशक- अश्विनभाई बी.शाह,
सरस्वती पुस्तक भंडार, अहमदाबाद-380001
2. प्रियदर्शिका - श्री हर्ष,
व्याख्याकार - पं. रामनाथत्रिपाठी शास्त्री,
चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन, वाराणसी- १९७८
3. रत्नावली - श्री हर्ष,
व्याख्याकार - पं. परमेश्वरदीन पाण्डेय:,
खम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास, - डॉ. कपिलदेव द्विवेदी,
प्रकाशक- रामनारायणलाल विजयकुमार,
२, कटरा रोड,इलाहाबाद -२११००२